

SMT. SUKRI BOMMU GOUDA

Smt. Sukri Bommu Gouda popularly known as "Sukrajji" is called as the nightingale of Halakki Tribe of Uttara Kannada. She is considered as a repository of songs and has songs for every occasion which includes marriage, birth, festival, harvest and other rituals. She enriched her skills in singing along with her mother as a child and later created and added her own songs and has sung more than thousand songs.

3. Born on February 02, 1937 Smt. Gouda is unable to read and write and has seen many ups and downs in her life. She is very hard working and even at this age she goes to forest to collect herbs, leaves, firewood and earns her livelihood. She is working day and night to preserve the rich traditions and customs prevailing in the society.

4. Smt. Gouda has very melodious voice and works tirelessly by singing songs on every occasion and on any platform to save their culture from disappearance. Her music has taken her across the country. She is strong, independent and courageous enough to be loved by everyone in and out of her community. She is a great social activist and her poetry and music have been her natural weapons to fight against the oppressive laws, social evils and she supports the cause of educating the girl child and campaigning for banning alcohol in the surroundings. Today she teaches the songs with traditions to other women and children and is one of the prominent figures of the Halakki Vokkal Tribe.

5. Smt. Gouda has been the recipient of Karnataka Janapada Yakshagana Academy Award in 1989, Karnataka Rajyostava Award in 1998, Janapada Shree Award of Janapada Academy in 1999, Sahyadri Kannada Sangha Adiga Award in 2003, Sandesh Prashasti in 2004. She has been conferred with Nadoja Award in 2007, Aiwa Nudisiri Award in 2009, Dr. Karim Khan Award in 2014.



श्रीमती सुक्रि बोम्मु गौडा

श्रीमती सुक्रि बोम्मु गौडा "सुक्राजी" के नाम से लोकप्रिय हैं एवं उत्तर कन्नड़ के हालाक्कि जनजाति की कोकिला कही जाती हैं। आपके पास गीतों का भंडार है एवं ये गीत विवाह, जन्म, उत्सव, लावणी एवं अन्य रितिरिवाजों सहित प्रत्येक अवसरों के लिए हैं। आपने बचपन में अपनी मां के साथ अपने गायन कौशल को समृद्ध किया एवं इसके पश्चात स्वयं अपने गीतों की रचना कर अपने गीत भंडार को और बढ़ाया तथा आपने एक हजार से अधिक गीत गाए हैं।

2. आपका जन्म 02 फरवरी, 1937 में हुआ। आपको अक्षर ज्ञान नहीं है एवं आपने अपने जीवन में कई उतार चढ़ाव देखे हैं। आप अत्यंत कठिन परिश्रमी हैं एवं इस आयु में भी आप औषधियों, पत्तों, जलावन की लकड़ी के संग्रह के लिए जंगल जाती हैं तथा अपनी आजीविका चलाती हैं। आप समृद्ध परंपरा एवं समाज में प्रचलित प्रथाओं के संरक्षण के लिए अहर्निश कार्यरत रहती हैं।

3. आपके कंठ स्वर अत्यंत मधुर हैं एवं आप प्रत्येक अवसर एवं प्रत्येक मंच पर गीत गाकर अपनी संस्कृति को विलुप्त होने से बचाने के लिए अथक प्रयास करती हैं। आपके संगीत ने आपको संपूर्ण देश में ख्याति दी है। आप मजबूत, स्वतंत्र एवं पर्याप्त साहसी हैं जिसे समुदाय के भीतर एवं बाहर सबसे प्रेम मिलता है। आप एक महान सामाजिक कार्यकर्ता हैं एवं आपका काव्य और संगीत, दमनकारी कानूनों, सामाजिक बुराईयों के विरूद्ध स्वाभाविक अस्त्र हैं तथा आप समाज में लड़कियों को पढ़ाने का समर्थन करती हैं तथा आपने अपने आसपास मद्यपान का निषेध करने के लिए अभियान चलाया। आज आप अन्य महिलाओं एवं बच्चों को परंपराओं के साथ-साथ गीतों की शिक्षा देती हैं और हालाक्कि वौक्कल जनजाति की एक प्रमुख विभूति हैं।

4. आपको वर्ष 1989 में कर्नाटक जनपद यक्षगण अकादमी पुरस्कार, वर्ष 1998 में कर्नाटक राज्योत्सव पुरस्कार, वर्ष 1999 में जनपद अकादमी का जनपद श्री पुरस्कार, वर्ष 2003 में सहयाद्री कन्नड़ संघ अडिग पुरस्कार, वर्ष 2004 में संदेश प्रशस्ति पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। आपको वर्ष 2007 में नदोजा पुरस्कार, वर्ष 2009 में आयवा नुदिश्री पुरस्कार, वर्ष 2014 में डॉ. करीम खान पुरस्कारों से भी सम्मानित किया जा चुका है।